वट वृक्षा –5

उत्तर पुस्तिका

Harbour Press®
INTERNATIONAL

1 तरुवर का मेरा आवास

(अभ्यास-उत्तर)

Page-9 (मौखिक)

(क) पक्षी जब वृक्ष पर बने अपने आवास पर स्वतंत्रता से रहता है तब वह प्रसन्नचित रहता है।

(ख) स्वतंत्र रहकर पक्षी को अच्छा लगता है।

(ग) गगन में पक्षी विचरण करता था।

(लेखनी)

1. (क) जब वह वृक्ष पर बने आवास पर रहता है।

(ख) पक्षी ने स्वतंत्रता को प्राणधन कहा है।

(ग) पक्षी का हृदय प्रथम पयोद आने पर खुश हो उठता था।

(घ) सोने के पिंजरे में किसी और का दास बनकर रहने को कवि ने नरक तुल्य जीवन कहा है।

2. (क) जब पक्षी स्वतंत्र रहकर इधर-उधर विचरण करता था तथा उसकी आज़ादी पर किसी प्रकार की कोई पाबंदी नहीं थी तब पक्षी का जीवन अत्यंत सुखी था।

(ख) पक्षी उस जीवन को नरक के समान मानता है जब उसकी आज़ादी को छीन लिया जाए तथा उसे गुलामी भरी ज़िंदगी जीनी पड़े।

3. (क) ✗ (ख) ✓

(ग) ✓

Page-10

4. (क) अ (ख) अ

(ग) स (घ) ब

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

पशु-पक्षी भी मनुष्य की तरह ही सजीव प्राणी हैं। उन्हें भी पीड़ा तथा सुख-दुख की अनुभूति होती है। मनुष्यों की भाँति वे भी ये इच्छा रखते हैं कि उन्हें न कोई मारे और न ही सताए। अत: हमें पशु-पक्षियों के प्रति सहानुभूति एवं दया का भाव रखना चाहिए।

(भाषा-ज्ञान)

1. (क) स् + उ + ख् + अ + क् + अ + र् + अ

(ख) उ + द् + आ + स् + अ

(ग) स् + व् + आ + ग् + अ + त् + अ

(घ) व् + इ + च् + अ + र् + अ + ण् + अ

(ङ) स् + व् + आ + ध् + ई + न् + अ

Page-11

2. (क) पानी, वारि

(ख) जमीन, भूमि

(ग) गृह, आलय

(घ) अंबर, आसमान

3. (क) सजीव (ख) सकुशल

(ग) सपरिवार (घ) सफल

(मन की बात)

हुआ हाय! पिंजरे में पड़कर,
कैसा भीषण परिवर्तन।
हा दुर्दैव! लुटा दुखिया का
स्वतंत्रता-सा प्राणधन।

Page-12 (हँसते-गाते)

1. **चिड़िया**

इक-इक तिनका जोड़कर चिड़िया
अपना घर बनाती है।
धूप, हवा, बारिश से
अपना परिवार बचाती है।
मेहनत से तुम न घबराना
हम सब को सिखलाती है।
छोटे-छोटे हाथों से वह
बड़े काम कर जाती है।

2. क. मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है।
   ख. मोर के पंख बहुत ही आकर्षक तथा सुंदर होते हैं।
   ग. मोर के पंखों को सजावट के सामान के रूप में प्रयोग किया जाता है।
   घ. वसंत एवं वर्षा ऋतु में मोर खुशी से नाचते हुए अपने सभी पंख फैला लेता है।
   ङ. मोर नुकसानदायक कीड़ों को खाता है इसलिए यह किसानों का अच्छा मित्र होता है।

विद्‌यार्थी स्वयं चित्र बनाकर उसमें रंग भरेंगे।

2 कबूतर की चतुराई

(अभ्यास-उत्तर)

Page-16 (मौखिक)

(क) महल राजा ने बनवाया था।
(ख) महल के खंडहर में कई कबूतर रहते थे।
(ग) सभी कबूतरों ने ठिकाना बदलने का सुझाव दिया।
(घ) कबूतर उड़कर चील वाले पेड़ पर जा बैठा था।

(लेखनी)

1. (क) मुखिया ने सभी को यह समझाया कि हम सभी यहाँ इकट्‌ठे रहते हैं और एक-दूसरे के सुख-दुख में काम आते हैं। अगर हम अलग-अलग हो जाएँगे, तो हम सब कुछ नहीं कर पाएँगे।
   (ख) सफ़ेद कबूतर ने सभी कबूतरों से दूर जाने का निर्णय लिया।
   (ग) चील कबूतर पर इसलिए गुस्सा हुई क्योंकि वह उसके पेड़ पर जा बैठा था।
   (घ) फैक्ट्री के पास से गुज़रने पर सफ़ेद कबूतर को आँखें और गला खराब होने का अनुभव हुआ। उसने देखा कि आसमान काला हो रहा है वह जैसे-जैसे वहाँ से गुज़र रहा है, उसका दम घुटने लगा है।

Page-17

2. (क) ✗ (ख) ✓
   (ग) ✓ (घ) ✓
3. (क) पुराना (ख) सभा

(ग) सुझाव (घ) शहर

(ङ) उड़

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

1. (क) अपमान (ख) अपवित्र

(ग) घृणा (घ) शत्रु

(ङ) अनादर (च) बुरा

Page-18

2. (क) सोहन के घर से कुछ ही दूरी पर एक फैक्ट्री बनी हुई है।

(ख) कबूतर बहुत सुंदर था।

(ग) सभा में सबने अपने-अपने सुझाव दिए।

(घ) जंगल में अनेक जानवर रहते हैं।

3. (क) पीला वस्त्र (ख) कृष्ण

(ग) विष्णु (घ) शिव

(ङ) गणेश

4.

स्त्रीलिंग	**पुल्लिंग**
फैक्ट्री	बच्चे
सीमा	महल
आँखें	खंडहर
चोंच	जंगल
चील	मुखिया

(मन की बात)

पेड़-पौधे हैं प्रकृति के अनुपम उपहार।
वृक्षों की सुरक्षा से करें न इनकार।

Page-19 (हँसते-गाते)

विद्यार्थी स्वयं करें।

3 तमिलनाडु–एक अनोखा प्रदेश

(अभ्यास-उत्तर)

Page-23 (मौखिक)

(क) तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई है।

(ख) विश्व का प्रथम ग्रेनाइट मंदिर तमिलनाडु के तंजौर में स्थित है।

(ग) मीनाक्षी मंदिर वास्तुकला का अनोखा नमूना है।

(घ) तमिलनाडु का प्रमुख भोजन चावल है।

(लेखनी)

1. (क) समुद्र का दृश्य, धान के लहलहाते खेत, तरह-तरह के ऊँचे वृक्ष, हरी-भरी नीलगिरी पर्वत शृंखला आदि तमिलनाडु की विशेषताएँ हैं।

(ख) रामेश्वरम मंदिर का संबंध त्रेता युग (रामायण) से है, इस मंदिर के बारे में माना जाता है कि यहाँ पर श्रीराम ने शिव जी की आराधना की थी।

(ग) तमिलनाडु स्थित कावेरी नदी द्रोणी को दक्षिण भारत का चावल का कटोरा कहा जाता है, क्योंकि वह नदी वहाँ की फसलों के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध कराती है।

(घ) तमिलनाडु के लोगों का मुख्य व्यवसाय नारियल के रेशों से रस्सी एवं पायदान आदि बुनना, समुद्री तट पर मछलियाँ

पकड़ना, धान, गन्ना, कॉफ़ी, काजू, नारियल आदि की खेती करना, रेशम की साड़ियाँ और कपड़े बुनना आदि है।

Page-24

2. (क) ब (ख) स
   (ग) अ
3. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

प्रस्तुत पाठ से हमें तमिलनाडु राज्य की जानकारी मिली है। यह राज्य भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित है, जहाँ समुद्र का दृश्य, धान के लहलहाते खेत, ऊँचे-ऊँचे वृक्ष, हरी-भरी नीलगिरि पर्वत शृंखला देखने को मिलती है। नारियल और केले के वृक्ष, जंगल, पशु-पक्षी, आम तथा काजू के बगीचे सभी का मन मोह लेते हैं। तमिलनाडु एक औद्योगिक राज्य है। इस राज्य की राजधानी चेन्नई है। विश्व का प्रथम ग्रेनाइट मंदिर तमिलनाडु के तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर है। मदुरई का मीनाक्षी मंदिर वास्तुकला का अनोखा नमूना है। पर्यटन के प्रमुख केंद्र-काँचीपुरम, ममल्लपुरम, तिरुचिरापल्ली और रामेश्वरम है। चैन्नई का मरीना तट विश्व का दूसरा सबसे लंबा समुद्र तट है। इस राज्य के निवासी परिश्रमी, ईमानदार तथा व्यवहार-कुशल होते हैं। कावेरी नदी 'द्रोणी' को दक्षिण भारत का चावल का कटोरा कहा जाता है। तमिलनाडु केलों और फूलों का सबसे बड़ा, आम, रबड़, मूँगफली, नारियल का दूसरा सबसे बड़ा और कॉफ़ी का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादन राज्य है। यहाँ के निवासियों का मुख्य व्यवसाय नारियल के रेशों से रस्सी, पायदान आदि बुनना, समुद्र तट पर मछली पकड़ना, धान, गन्ना, कॉफ़ी, काजू, नारियल की खेती करना, रेशम की साड़ियाँ और कपड़े बुनना है। इस राज्य के निवासी चावल से बने व्यंजन, जैसै- डोसा, उत्तपम, इडली खाना ज़्यादा पसंद करते हैं। तमिलनाडु में भोजन को केले के पत्ते पर परोसा जाता है। खाने में मिर्च-मसाले का अधिक प्रयोग किया जाता है। भरतनाट्यम तमिलनाडु का लोकप्रिय नृत्य है।

Page-25 (भाषा-ज्ञान)

1. (क) गुरुमुखी (ख) रोमन
   (ग) फ़ारसी (घ) देवनागरी
   (ङ) देवनागरी (च) देवनागरी
2. (क) सँवारा (ख) पहाड़ियाँ
   (ग) शृंखला (घ) संगम
   (ङ) यहाँ (च) मंदिरों
3. (क) इमारतें (ख) कारें
   (ग) चीज़ें (घ) टीले
   (ङ) सड़कें (च) कमरे
4. (क) तरुवर, वृक्ष
   (ख) धरती, भू
   (ग) स्थान, इलाका
   (घ) शैल, पहाड़
5. (क) पर्वतीय - पहाड़ी
   (ख) औद्योगिक - उद्योग संबंधी
   (ग) सर्वाधिक - अत्यधिक
   (घ) नागरिक - नगर में रहने वाला
   (ङ) विकसित - उन्नत
   (च) धार्मिक - धर्म संबंधी
   (छ) प्राकृतिक - अकृत्रिम
   (ज) सांस्कृतिक - संस्कृति संबंधी
   (झ) पौराणिक - पुराणों से संबंधित

Page-26

6.

उपसर्ग	मूल शब्द
उन	तीस
अध	पका
स	पूत
स्व	राज
दुः	लभ

(मन की बात)

1. 456, मयूर विहार,

दिल्ली

01.01.20XX

प्रिय मित्र रवि,

मैं सकुशल हूँ। आशा है कि तुम भी ठीक होगे। मैं अपने माता-पिता के साथ तमिलनाडु राज्य में एक सप्ताह रहने के लिए गया था। इस बीच हमने वहाँ के मनमोहक प्राकृतिक स्थल देखे जिनमें नीलगिरी पर्वत शृंखला, समुद्र के दृश्य आदि शामिल थे। वहाँ कई प्रसिद्ध धार्मिक स्थल भी थे। मदुरई का मीनाक्षी मंदिर तो वास्तुकला का अनोखा संगम है, जो वहाँ की भव्यता में चार चाँद लगा देता है। वहीं कन्याकुमारी मंदिर में रेत के तीन रंगों का होना एक अद्भुत नज़ारा था। प्राकृतिक, सांस्कृतिक तथा पौराणिक कारणों से तमिलनाडु अत्यंत सुंदर राज्य है। जब कभी तुम भारत वापस आओ तो हम दोबारा तमिलनाडु घूमने की योजना बनाएँगे ताकि तुम भी वहाँ के विविध पक्षों की भव्यता को देख सको। हम सब मिलकर खूब मस्ती करेंगे।

अंकल-आंटी को मेरा प्रणाम कहना

तुम्हारा मित्र

रोहित

2. मैं भारत के तमिलनाडु राज्य को देखना चाहता हूँ, क्योंकि इसकी विशेषताओं के बारे में मैंने बहुत कुछ सुन रखा है। पहले इसे मद्रास राज्य कहा जाता था और इसकी राजधानी का नाम भी मद्रास था। अब राजनीतिज्ञों द्वारा मद्रास का नाम चेन्नई कर दिया गया है। मैं इसे इसकी प्राकृतिक सुंदरता और प्रसिद्ध मंदिरों के कारण भी देखना चाहता हूँ।

Page-27 (हँसते-गाते)

विद्यार्थी स्वयं करें।

4 शिक्षा से बढ़कर कोई धन नहीं

(अभ्यास-उत्तर)

Page-30 (मौखिक)

(क) राजा का नाम रतन सिंह था।

(ख) राजा पशु-पक्षियों से प्रेम करते थे।

(ग) राजा तीन बालकों को इनाम देना चाहते थे।

(घ) बाढ़ में पहले बालक का बंगला और गाड़ी सब बह गया।

(ङ) तीसरा बालक पढ़-लिखकर विद्वान बन गया।

Page-31 (लेखनी)

1. (क) राजा प्रतिदिन वन में पशु-पक्षियों से भेंट करने जाते थे।

(ख) राजा बालकों को इनाम इसलिए देना चाहते थे क्योंकि उन्होंने राजा के लिए भोजन एवं पानी का प्रबंध किया था और राजा उनके व्यवहार से खुश थे।

(ग) दोनों व्यक्तियों को पछतावा इसलिए हो रहा था क्योंकि वे अपने जीवन की खुशियों को खो

चुके थे और उन्हें लगा कि उन्होंने राजा से इनाम माँगने में बहुत बड़ी भूल की।

(घ) दूसरे बालक ने राजा से बहुत सारा धन माँगा।

(ङ) दोनों व्यक्तियों ने अपनी अधूरी शिक्षा को पूरी करने तथा जीवन को सुखी बनाने का प्रण लिया।

2. (क) राजा ने तीनों बालकों से कहा।

(ख) पहले बालक ने राजा से कहा।

(ग) पहले दो बालकों ने तीसरे बालक अर्थात् अपने मित्र से कहा।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-32 (जीवन-मूल्य)

1. शिक्षा व्यक्ति की आंतरिक क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। समाज का जागरूक सदस्य तथा एक सफल व ज़िम्मेदार नागरिक बनने के लिए यह व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाती है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो दिन-प्रतिदिन सीखने के नवीन अनुभवों का विकास करती है। यह व्यक्ति में आत्मविश्वास विकसित करती है। अच्छी शिक्षा ग्रहण कर व्यक्ति मन वांछित पद प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने जीवन में कुछ अलग करने का सपना देखता है। कभी-कभी कुछ माता-पिता भी अपने बच्चों को बड़ा होकर डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक या इसी प्रकार के उच्च पदों पर देखना चाहते हैं; इन सभी सपनों को केवल अच्छी शिक्षा ग्रहण करके ही पूरा किया जा सकता है। यह जीवन में सफलता प्राप्त करने हेतु व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है।

2. प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति अपने जीवन में ग्रहण की गई शिक्षा के दम पर अच्छा पद ग्रहण कर अच्छा वेतन प्राप्त कर सकता है। किंतु एक अशिक्षित तथा धनवान व्यक्ति अपना सर्वस्व लुटाकर भी बुद्धि की प्राप्ति नहीं कर सकता। बुद्धि केवल शिक्षा प्राप्त करके ही आती है। एक व्यक्ति का मानसिक विकास शिक्षा के द्वारा ही हो सकता है और उसी के द्वारा उसके सोचने-समझने की क्षमता में वृद्धि होती है। एक छोटे बालक को जब विद्यालय में प्रवेश कराया जाता है तो उसकी विद्यालयी शिक्षा का वह प्रथम चरण होता है किंतु जब वह विद्यालयी शिक्षा पूर्ण करता है तब तक उसके सोचने-समझने की क्षमता पूर्णतः विकसित हो चुकी होती है और उसी के बल पर वह अपने भावी जीवन में कुछ बनने का लक्ष्य निर्धारित करता है और उच्च पद पर आसीन हो जाता है। वहीं एक अशिक्षित व्यक्ति अपना सब धन ही क्यों न लगा दे तब भी वह बुद्धि प्राप्त नहीं कर सकता।

Page-33 (भाषा-ज्ञान)

1. (क) गद्दा - मुद्दा

(ख) इज़्ज़त - लज़्ज़त

(ग) खट्टा - पट्टा

(घ) चप्पल - छप्पर

(ङ) पत्ता - छत्ता

2. (क) क्ष (ख) त्र

(ग) ज्ञ (घ) श्र

3. (क) खुशियाँ (ख) व्यवहार

(ग) विचरण (घ) प्रतीक्षा

(ङ) व्यवस्था

4. (क) आवा (ख) नार

(ग) पन (घ) कार

(ङ) त्व (च) गुना

5. (क) व् + य् + अ + व् + अ + ह् + आ + र् + अ
(ख) प् + र् + अ + त् + ई + क् + ष् + आ
(ग) व् + इ + च् + अ + ल् + इ + त् + अ
(घ) द् + औ + ल् + अ + त् + अ
(ङ) प् + र + अ + ब + अं + ध् + अ

Page-34

6. (क) राजा रतन सिंह/पशु–पक्षियों/प्रेम
(ख) भूख–प्यास/थकान/राजा/पेड़
(ग) राजा/बालकों/खुश
(घ) बालक/विद्यालय/पुस्तक
(ङ) गोस्वामी तुलसीदास/रामायण

(मन की बात)

विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-35 (हँसते-गाते)

चित्र में दो बालक विद्यालय जा रहे हैं तथा एक बालक मज़दूरी कर रहा है। मेरे विचार से यह गलत है क्योंकि 14 वर्ष की आयु से कम के बच्चों को बाल मजदूरी करने के लिए संविधान ने रोक लगाई है। यहाँ तक कि संविधान में 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त तथा अनिवार्य शिक्षा की बात भी कही गई है। अतः विद्यालय जाकर शिक्षा अर्जित करना उस बालक का भी अधिकार है जो चित्र में मजदूरी करता हुआ दिख रहा है।

5 पिपीलिका

(अभ्यास-उत्तर)

Page-39 (मौखिक)

(क) प्रस्तुत कविता निरंतर परिश्रम से काम करने तथा आलस्य से खुद को दूर रखने पर आधारित है।
(ख) चींटी बच्चों की निगरानी करती है।
(ग) (द)

(लेखनी)

1. (क) चींटी है प्राणी सामाजिक, वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।
(ख) 'तम के धागे-सी' पंक्ति से कवि का अभिप्राय अँधेरे के धागे के समान है।
(ग) प्रस्तुत कविता का नाम 'पिपीलिका' तथा कवि का नाम 'सुमित्रानंदन पंत' है।
(घ) प्रस्तुत कविता में चींटियों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि चींटी जैसे लघु प्राणी भी जब निरंतर कार्य करने के लिए प्रयत्नशील हैं, तो मनुष्य क्यों अपना आलस्य त्यागकर कर्मरत नहीं रह सकता, वह भी अन्य व्यक्तियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रख सकता है।

2. (क) वह है पिपीलिका-पाँति
देखो न, किस भाँति,
काम करती वह सतत,
कन-कन करके चुनती अविरत।
(ख) चींटी है प्राणी सामाजिक,
वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।

Page-40

3. (क) पिपीलिका 'चींटी' को कहा गया है।
   (ख) पिपीलिका निरंतर परिश्रम से काम करती रहती है। अपने मैत्रीपूर्ण संबंध के कारण ही चींटियाँ पंक्तिबद्ध होकर बिना थके तथा बिना रुके कर्मरत रहती हैं।
   (ग) चींटी से हमें निरंतर प्रयत्नशील बने रहने की प्रेरणा मिलती है तथा अपने आलस्य को खत्म करके आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहने का भाव भी चींटी से मिलता है।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

मैं अपने मित्रों को अपना कार्य समय पर पूरा करना सिखाऊँगी। उन्हें बड़ों के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना सिखाऊँगी। अपने मित्रों को मैं समय पर विद्यालय में पहुँचने के लिए भी बाध्य करूँगी तथा हम एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य करें, इसके लिए भी सहयोग पूर्ण व्यवहार करूँगी।

Page-41 (भाषा-ज्ञान)

1. (क) दही (ख) दूध
   (ग) घी (घ) चना
   (ङ) आम (च) खीर
2. (क) (ii) (ख) (v)
   (ग) (vii) (घ) (viii)
   (ङ) (iv) (च) (iii)
   (छ) (i) (ज) (vi)
3. (क) चींटियों की निर्माण-कला अद्भुत होती है।
   (ख) बच्चे आँगन में खेलते हैं।
   (ग) चींटी जैसा लघु प्राणी भी सदैव कार्यरत रहता है।
   (घ) कोई भी लक्ष्य सरल नहीं होता।
   (ङ) चींटियाँ ज़्यादातर एक रेखा में चलती हैं।

Page-42 (मन की बात)

चींटी को संसार का सबसे छोटा प्राणी माना जाता है, लेकिन इनकी अपनी कुछ विशेषताएँ भी हैं। संसार के देशों में 15 हज़ार से भी अधिक किस्मों की अनोखी चींटियाँ पाई जाती हैं। रानी चींटी अपने जीवनकाल के दौरान लगभग 60000 अंडे देती है। रानी चींटी पंखों वाली होती है। भूरे रंग की चींटियाँ काले रंग की चींटियों की तुलना में काफ़ी आक्रामक होती हैं। ये तुरंत काट लेती हैं तथा काटने पर काफ़ी जलन होती है। जब कोई चींटी मर जाती है तो उसके शरीर से एक केमिकल निकलता है जिससे दूसरी चींटियाँ यह समझ जाती हैं कि वह चींटी मर चुकी है। अगर वही केमिकल दूसरी ज़िंदा चींटी पर डाल दिया जाए तो चींटियाँ उसे भी मरा समझने लगती हैं।

(हँसते-गाते)

विद्यार्थी स्वयं करें।

6 मेरा छात्र जीवन

(अभ्यास-उत्तर)

Page-46 (मौखिक)

(क) इस पाठ में गांधी जी ने अपने विद्यार्थी जीवन के बारे में बताया है।
(ख) गांधी जी के संस्कृत के मास्टर का नाम कृष्णशंकर था।
(ग) लेख सुधारने के लिए आलेखन कला सीखनी चाहिए।

(घ) बचपन में गांधी जी प्रतिभावान विद्यार्थी थे।

(लेखनी)

1. (क) गांधी जी को अपने खराब लेख पर उस समय पछतावा हुआ जब वे दक्षिण अफ्रीका गए तथा वहाँ वकीलों एवं वहाँ जन्मे और पढ़े युवकों के मोती जैसे अक्षर देखे।

(ख) गांधी जी मास्टर कृष्णशंकर का उपकार इसलिए मानते थे क्योंकि जितनी संस्कृत उन्होंने उनके कहने पर उस समय पढ़ी थी उसी के कारण वे संस्कृत शास्त्रों का आनंद ले पाते थे।

(ग) पाठ के अनुसार भारतवर्ष की उच्च शिक्षा में मातृभाषा के बाद राष्ट्रभाषा हिंदी, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी भाषाओं को होना चाहिए।

(घ) गांधी जी को अपने खराब लेख का सदैव मलाल रहा था। इस संदर्भ में उन्होंने ये शब्द कहे – "परंतु पक्के घड़े पर मिट्टी कब चढ़ सकती है?" उन्होंने बाद में अपने लेख को सुधारने की कोशिश की किंतु लेख सुधार की बचपन में की गई अवहेलना को वे फिर न सुधार सके।

2. (क) भाग्य (ख) सुलेख
(ग) उपकार (घ) गहरे

Page-47

3. (क) अ (ख) ब
(ग) ब (घ) ब

4. विद्यार्थी स्वयं करें

(जीवन-मूल्य)

गांधी जी के इस लेख से यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने द्वारा की जाने वाली गलतियों को समय रहते सुधार लेना चाहिए, क्योंकि समय बीतने के बाद हमारे पास केवल पछताने के सिवा अन्य कुछ शेष नहीं रह जाता। अपनी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देकर हम एक दिन बड़े आदमी बन सकते हैं। इस लेख से हमें यह शिक्षा भी मिलती है कि हमें अपने जीवन में अच्छी-अच्छी बातें ग्रहण करनी चाहिए।

Page-48 (भाषा-ज्ञान)

1. (क) मान + चित्र = मानचित्र
(ख) आ + वास = आवास
(ग) आ + योग = आयोग
(घ) अप + मान = अपमान
(ङ) पह + चान = पहचान
(च) बहु + तेरा = बहुतेरा

2. (क) हाईस्कूल में गांधी जी को मूर्ख नहीं माना जाता था।
(ख) हमें सदैव माँ की आज्ञा का पालन करना चाहिए।
(ग) गांधी जी एक अच्छे विद्यार्थी थे।
(घ) हर युवक को सुलेख पर ध्यान देना चाहिए।
(ङ) गांधी जी दक्षिण अफ्रीका के युवकों से बहुत प्रभावित थे।
(च) गांधी जी के संस्कृत के मास्टर का नाम कृष्णशंकर था।

3. (क) संबंधवाचक सर्वनाम
(ख) निजवाचक सर्वनाम
(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम
(घ) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(ङ) प्रश्नवाचक सर्वनाम

4. (क) पंद्रह (ख) इनाम
(ग) संस्कृत (घ) मुश्किल
(ङ) समस्त (च) शुरू

Page-49 (मन की बात)

गांधी जी ने बचपन में पढ़ाई में सुलेख को आवश्यक नहीं माना जिसके कारण दक्षिण

अफ्रीका जाकर उन्हें अत्यधिक पछतावा हुआ। यद्यपि उन्होंने बाद में अपने लेख में सुधार की कोशिश अवश्य की परंतु वे अपने लेख को सुधारने में नाकामयाब रहे। उन्होंने सुलेख को शिक्षा का आवश्यक अंग माना है। लेख सुधारने के लिए उन्होंने लेखन कला को आवश्यक बताया है और यही कारण है कि जिस चीज़ की अवहेलना उन्होंने बचपन में की तथा जिस बात का पछतावा उन्हें सदैव रहा वे उसी से नवयुवकों व नवयुवतियों को सीख लेने की बात कहते हैं।

(हँसते-गाते)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. सामान्य रूप से किसी राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने वाले राजनेता को उस देश के नागरिक अपने राष्ट्र के पिता के रूप में सम्मान देते हैं और वह राष्ट्रपिता के रूप में जाना जाने लगता है।

   गांधी जी को भी भारत देश का राष्ट्रपिता कहा जाता है। वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक नेता थे। सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों पर चलकर उन्होंने भारत को आज़ादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके इन सिद्धांतों ने पूरी दुनिया में लोगों को नागरिक अधिकारों एवं स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रेरित किया। यही कारण है कि उन्हें राष्ट्रपिता के रूप में संबोधित किया जाता है।

Page-50

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

7 मेरी डायरी में गुजरात

(अभ्यास-उत्तर)

Page-54 (मौखिक)

(क) मेहुल दस वर्ष का था।

(ख) मेहुल अपने माता-पिता के साथ गुजरात आया था।

(ग) भारत के चार पवित्र धाम हैं– द्वारिका, बदरीनाथ-केदारनाथ, जगन्नाथपुरी और रामेश्वरम्।

(घ) मेहुल को देश-भ्रमण का शौक था।

(लेखनी)

1. (क) द्वारिका को भारत का प्रवेश-द्वार कहा जाता है।

(ख) लेखक को चोरवाड़ इसलिए अच्छा लगा क्योंकि वहाँ नागरबेल तथा फल-फूलों से लदे हरे-भरे बगीचे थे।

(ग) डाँडिया और गरबा गुजरात के ऐसे प्रसिद्ध नृत्य हैं, जिनमें स्त्री-पुरुष घेरा बनाकर छोटे-छोटे डंडों और कदमों की ताल पर नाचते हैं।

(घ) 29 सितंबर को मेहुल जूनागढ़ में था।

Page-55

(ङ) 25 सितंबर में अहमदाबाद का वर्णन है।

(च) डायरी लेखक मेहुल है। इस डायरी में गुजरात का वर्णन है।

2. (क) ब (ख) ब
(ग) ब

3. (क) गांधी जी (ख) श्रीकृष्ण
(ग) चोरवाड़ (घ) सुदामा
(ङ) गुजरात

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-56 (भाषा-ज्ञान)

1. (क) चित्र (ख) पवित्र
(ग) मित्र (घ) वेशभूषा
(ङ) कष्ट (च) पुरुष
(छ) कृष्ण (ज) दत्तात्रेय

2. (क) लड़का - जातिवाचक
(ख) गंगा - व्यक्तिवाचक, हिमालय - व्यक्तिवाचक
(ग) माँ - जातिवाचक, ममता - भाववाचक
(घ) हरियाली - भाववाचक
(ङ) पक्षी - जातिवाचक, दाना - जातिवाचक

3. (क) शिष्या (ख) पहाड़ी
(ग) बकरी (घ) बंदरिया
(ङ) नानी (च) डिब्बी

4. (क) उसे घर जाना पड़ा।
(ख) हमें खाना खाना पड़ा।

5. (क) जैसे-जैसे किसी वस्तु का बिंब मन पर अंकित होता जाता है वैसे-वैसे वह वस्तु और अधिक साफ़ दिखने लगती है।
(ख) रोते शिशु को देखकर माँ ने उसे अपने हृदय से चिपका लिया।
(ग) ए. आर. रहमान के संगीत की धुनें अत्यधिक आकर्षक होती हैं।
(घ) मेहुल का गुजरात भ्रमण उसके लिए स्मरणीय था।

Page-57

6. (क) नरसी मेहता गुजराती भक्ति साहित्य के श्रेष्ठतम कवि थे।
(ख) श्रीकृष्ण-सुदामा के मध्य मैत्री भाव बचपन से ही था।
(ग) गुजरात के प्रसिद्ध मंदिर हैं–
(i) श्री द्वारिकाधीश मंदिर
(ii) सोमनाथ मंदिर
(iii) श्री स्तंभेश्वर महादेव
(iv) अम्बा जी मंदिर
(v) निष्कलंक महादेव मंदिर

(मन की बात)

1. प्रस्तुत पाठ से हमें गुजरात के विभिन्न स्थलों की जानकारी मिली। इस पाठ से हमें यह भी जानने को मिला कि गांधी जी का प्रिय भजन नरसी मेहता द्वारा रचित है। हमें भारत के चार पवित्र धामों का भी पता चला। गुजरात के प्रसिद्ध नृत्य डाँडिया व गरबा के बारे में जानने का अवसर भी हमें प्राप्त हुआ।

हमने जूनागढ़ तथा चोरवाड़ के बारे में भी जाना। आम का एक प्रकार 'केशरकरी' भी है, यह जानकारी भी इस पाठ से मिली। इस पाठ से हमें ये भी पता चला कि गुजरात को विभिन्न धर्मों की एकता का केंद्र कहा जाता है।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-58

(हँसते-गाते)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

8 ज्वालामुखी

(अभ्यास-उत्तर)

Page-61 (मौखिक)

(क) ज्वालामुखी तीन प्रकार के होते हैं।

(ख) लावा का तापमान 1200 डिग्री से॰ तक मापा गया है।

(ग) बिजली का निर्माण ज्वालामुखी से निकलने वाली भाप से किया जाता है।

(घ) जिन ज्वालामुखियों में कभी विस्फोट नहीं होते, उन्हें मृत ज्वालामुखी कहते हैं।

(लेखनी)

1. (क) ज्वालामुखी तीन प्रकार के होते हैं – सक्रिय, सुषुप्त और मृत।

(ख) क्राकातोआ द्वीप के ज्वालामुखी-विस्फोट से लगभग 36 हजार लोगों की जानें गईं।

(ग) जिन ज्वालामुखियों में विस्फोट होते रहते हैं, उन्हें सक्रिय ज्वालामुखी कहते हैं।

(घ) ज्वालामुखी से निकलने वाले पदार्थ प्रायः ठोस, द्रव एवं गैस रूपों में होते हैं।

(ङ) ज्वालामुखी विस्फोट के बाद आस-पास की भूमि काफ़ी उपजाऊ हो जाती है। यह गरम पानी के झरने व झीलों आदि का निर्माण करता है। ज्वालामुखी से निकलने वाली भाप से बिजली का निर्माण भी किया जाता है।

Page-62

2. (क) भाप (ख) प्राकृतिक
(ग) गरम (घ) दो

3. (क) ✓ (ख) ✓
(ग) ✗ (घ) ✓
(ङ) ✗

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

'ज्वालामुखी' भूपटल पर वह प्राकृतिक छिद्र अथवा दरार है जिससे होकर पृथ्वी का पिघला पदार्थ लावा, राख, जलवाष्प, ठोस पदार्थ तथा अन्य गैसें बाहर निकलती हैं। इसे प्रकृति का 'सुरक्षा वॉल्व' भी कहा जाता है। ज्वालामुखी में जलवाष्प के अलावा कार्बन डाईऑक्साइड, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन आदि जैसी गैसें होती हैं। इसके लावा के झाग से बने हल्के और छिद्रयुक्त शिलाखंड 'प्यूमिस' कहलाते हैं। ज्वालामुखी छिद्र के चारों तरफ़ लावा के अत्यधिक मात्रा में जमाव होने पर ज्वालामुखी पर्वत का निर्माण होता है।

(भाषा-ज्ञान)

1. (क) सोनम का घर कर्नाटक राज्य में स्थित है।

(ख) माता-पिता का वश उनके बच्चों पर ही चलता है।

(ग) नई दिल्ली में प्रदूषण का स्तर बढ़ने के कारण सब धुँधला होने लगा।

(घ) मजदूरों द्वारा भवनों का निर्माण किया जाता है।

Page-63

2. (ख) ज्वालामुखी विस्फोट होंगे।
   (ग) बिजली का निर्माण करेंगे।
3. (क) प्राकृतिक (ख) वैज्ञानिक
   (ग) भौगोलिक (घ) ऐतिहासिक
4. (क) (ii) (ख) (vi)
   (ग) (iv) (घ) (i)
   (ङ) (iii) (च) (v)
5. (क) से (ख) में
   (ग) ने (घ) के लिए
   (ङ) से (च) पर

Page-64

6. (क) ज्वालामुखी – ज् + व् + आ + ल् + आ + म् + उ + ख् + ई
   (ख) विस्फोट – व् + इ + स् + फ् + ओ + ट् + अ
   (ग) तापमान – त् + आ + प् + अ + म् + आ + न् + अ
   (घ) आदमियों – आ + द् + अ + म् + इ + य् + ओं
   (ङ) नुकसान – न् + उ + क् + अ + स् + आ + न् + अ
   (च) द्वीप – द् + व् + ई + प् + अ
   (छ) किलोमीटर – क् + इ + ल् + ओ + म् + ई + ट् + अ + र् + अ

(मन की बात)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(हँसते-गाते)

विद्यार्थी स्वयं करें।

9 इसे जगाओ

(अभ्यास-उत्तर)

Page-67 (मौखिक)

(क) कवि ने सोए हुए व्यक्ति को जगाने के लिए कहा है।

(ख) सच से बेखबर व्यक्ति सपनों में खोया पड़ा है।

(ग) सच से बेखबर व्यक्ति सो रहा है।

(घ) इस कविता के कवि भवानी प्रसाद मिश्र हैं।

Page-68 (लेखनी)

1. (क) कवि के अनुसार व्यक्ति को वक्त पर जाग जाना चाहिए।
   (ख) कविता में सूरज, पवन व पंछी से आदमी को जगाने के लिए कहा गया है।
   (ग) प्रस्तुत कविता में कवि समय के महत्व से हम सभी को अवगत कराना चाहता है। जीवन में प्रत्येक कार्य अपने निर्धारित समय पर करने चाहिए। समय का पालन करके ही हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। जो व्यक्ति समय का पालन नहीं करता, वह जीवन में पिछड़ जाता है।

(घ) 'जो सही क्षण में सजग है' का अर्थ है कि जो व्यक्ति समय का पालन करता है वह प्रत्येक कार्य समय रहते पूर्ण कर लेता है।

(ङ) 'जो सच से बेखबर सपनों में खोया पड़ा है' अर्थात ऐसा व्यक्ति केवल आलस्य में डूबा रहता है और प्रत्येक कार्य को समय पर पूर्ण नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति जीवन में केवल सपने ही बुनता रह जाता है, वह अपने लक्ष्य का निर्धारण नहीं कर पाता। अत: वह समय के महत्व को नहीं पहचान पाता और सपनों में ही खोया रह जाता है।

2. नहीं तो बेवक्त जागेगा यह,
तो जो आगे निकल गए हैं,
उन्हें पाने घबराकर भागेगा यह।
घबराकर भागना अलग है,
क्षिप्र गति अलग है,
जो सही क्षण में सजग है।

3. (क) ब (ख) ब

Page-69

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

इस कविता का मूल भाव यह है कि हमारे जीवन में घटित होने वाले प्रत्येक कार्य को करने का एक नियत समय निर्धारित होता है, जिसका पालन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। जो व्यक्ति अपने कार्य को समय के साथ पूर्ण करता चला जाता है, सफलता सदैव उसके कदम चूमती है। किंतु ऐसा व्यक्ति जो सदैव आलस्य या भाग्य के सहारे बैठा रहता है उसे केवल असफलता का ही सामना करना पड़ता है।

(भाषा-ज्ञान)

1. (क) सकर्मक क्रिया
(ख) अकर्मक क्रिया
(ग) अकर्मक क्रिया
(घ) अकर्मक क्रिया
(ङ) सकर्मक क्रिया

2. (क) तम, अंधकार, तिमिर
(ख) नर, मानव, मानुष
(ग) नृप, नरेश, महीपति
(घ) सखा, दोस्त, सहचर
(ङ) जगत, संसार, दुनिया

3. (क) सोहन साइकिल पर सवार है।
(ख) श्रीकृष्ण ने बाँसुरी बजाई।

Page-70

(ग) माँ ने बर्तन को हाथ से पकड़ रखा है।

(घ) मोहन पैसों के लिए रोहन से झगड़ रहा था।

4. (क) तुम लोगों के पास झख मारने के अलावा कोई काम नहीं है, पर हमें तो काम करना पड़ता है।

(ख) परीक्षा में प्रथम स्थान पाने के कारण सतीश्वर फूला न समाया।

(ग) अपने नवजात शिशु को अपनी गोद में लेते ही माता का गला भर आया।

(घ) बेटे की करतूतों से दुखी माँ ने बेटे को घर से निकाल दिया और कुछ दिनों बाद जब बेटा घर वापस लौटा तो बेटे को देखकर माँ का दिल पसीज गया।

(मन की बात)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. समय बहुत मूल्यवान है। इसकी कीमत सोना-चाँदी तथा हीरे से भी कई गुना अधिक होती है। एक बार जो समय बीत जाता है, वह दोबारा कभी नहीं आता। चाहे उसके लिए कितने भी पैसे क्यों न खर्च कर लिए जाएँ।

ऐसे बहुत सारे व्यक्ति एवं विद्यार्थी हैं,

जिन्हें अपने समय के महत्व का पता नहीं है। ऐसे लोग अपना ज़्यादातर समय गप्पें हाँकने, सिनेमा देखने, खेलने-कूदने, सोने या फिर अन्य व्यर्थ के कार्यों को करने में नष्ट कर देते हैं। ऐसे लोगों को जब परीक्षा देनी हो या फिर कोई अन्य काम करना हो तो वह मुसीबत में पड़ जाते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने कार्य को करने के लिए अपेक्षित पूर्व तैयारी नहीं की होती। अगर समय को यूँ ही व्यर्थ किया जाए तो व्यक्ति को कभी-न-कभी मुसीबत उठानी ही पड़ती है। जो लोग अपने समय की कीमत पहचानते हैं, उनकी सफलता को कोई रोक नहीं सकता।

अतः हम सभी लोगों को समय का महत्व समझते हुए इसके एक-एक पल का अच्छी तरह से उपयोग करना चाहिए। हम जितना ज़्यादा समय को अच्छी तरह से उपयोग में लाएँगे, उतना अच्छा फल हमें प्राप्त होगा।

(हँसते-गाते)

1. 435, राजौरी गार्डन
नई दिल्ली - 110015
10 फरवरी, 20XX

प्रिय रजनीश

मधुर स्नेह,

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और ईश्वर से तुम्हारी कुशलता की सदैव प्रार्थना करता हूँ। कल ही मुझे तुम्हारे छात्रावास की अध्यापिका का पत्र मिला जिसे पढ़कर मुझे अत्यंत दुख हुआ कि तुम गलत संगति में पड़कर अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हो। तुम्हारे लिए यह समय अमूल्य है। इस समय को यदि गलत कार्यों में बर्बाद कर दोगे तो जीवन में कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकोगे। माता-पिता भी तुमसे बहुत आशाएँ रखते हैं, जिन्हें पूरा करना तुम्हारा कर्तव्य है। अतः आशा है कि तुम मेरी बात की गंभीरता को समझते हुए अच्छे मित्रों की संगति करोगे तथा पढ़ाई पर ठीक से ध्यान दोगे।

माता-पिता तथा मेरी ओर से तुम्हें ढेर सारा प्यार।

तुम्हारा अग्रज

अभिलाष

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

10 बोध

(अभ्यास-उत्तर)

Page-76 (मौखिक)

(क) स्कूल के अध्यापक का नाम पंडित चंद्रधर था।

(ख) पंडित जी के दोनों पड़ोसियों के नाम ठाकुर अतिबल सिंह और मुंशी बैजनाथ थे।

(ग) रात को एक बजे अयोध्या जाने की गाड़ी घूटती थी।

(घ) मुसाफ़िरों ने दारोगा जी को जगह इसलिए नहीं दी क्योंकि पहले दारोगा ने मुसाफ़िर पर जासूसी का आरोप लगाकर उससे पच्चीस

रुपए हथियाए थे और दूसरे मुसाफ़िर की दारोगा ने डंडे से पिटाई की थी।

(लेखनी)

1. (क) पंडित जी का व्यवहार छात्रों के प्रति उदार था।

(ख) ठाकुर साहब ने पहले मुसाफ़िर को जब डाँटकर सीट से उठने के लिए कहा तो उसने रौब दिखाते हुए कहा, कि यह थाना नहीं है ज़रा ज़बान सँभालकर बात कीजिए। तो ठाकुर ने इसके प्रत्युत्तर में कहा कि तुम कौन हो जी?

(ग) दूसरे मुसाफ़िर ने ठाकुर जी से हँसते हुए कहा, "अरे दारोगा साहब, आप ही नीचे क्यों नहीं बैठ जाते, यह थाना थोड़े ही है कि आपके राज में फ़र्क पड़ जाएगा।"

(घ) कृपाशंकर हाथ बाँधे सेवक की भाँति इसलिए दौड़ता था, क्योंकि वह पंडित जी का पुराना शिष्य था और अपने गुरु जी की सेवा कर उनके प्रति आदर भाव प्रकट करना चाहता था। उनकी सेवा को वह अपना परम सौभाग्य समझता था।

Page-76-77

2. (क) ब (ख) ब
(ग) अ

Page-77

3. (क) चोखेलाल ने दारोगा से।
(ख) पंडित जी ने कृपाशंकर से।
(ग) ठाकुर ने पहले मुसाफ़िर से।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-78 (भाषा-ज्ञान)

1.

	शब्द	भेद
(क)	अवश्य	रीतिवाचक
(ख)	बहुत	परिमाणवाचक
(ग)	भीतर	स्थानवाचक
(घ)	धीरे-धीरे	रीतिवाचक
(ङ)	आज	कालवाचक
(च)	कल	कालवाचक

2. (क) हाथ - टैक्स
(ख) गोद - संख्या
(ग) योग - वंश
(घ) बिजली - लक्ष्मी

3.

	सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
(क)	यह	बहुत
(ख)	यह	काफ़ी
(ग)	उस	मकान
(घ)	वह	साइकिल

(मन की बात)

1. प्रस्तुत कहानी से हमें यह शिक्षा मिली कि हमें अपना प्रत्येक कार्य ईमानदारी से करना चाहिए। अपने नैतिक मूल्यों का जीवनभर पालन करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के साथ अपना व्यवहार अनुकूल बनाए रखना चाहिए। स्वार्थ को कभी भी अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए और सदैव अपने गुरुजनों का आदर करना चाहिए।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-79 (हँसते-गाते)

विद्यार्थी स्वयं करें।

11 शिष्टाचार

(अभ्यास-उत्तर)

Page-85 (मौखिक)

(क) बड़ों के साथ नम्रता और शिष्टता से बातचीत करनी चाहिए।

(ख) बातचीत की शैली ऐसी हो कि सुनने वाले की भावनाओं को न तो चोट पहुँचे, न ही किसी प्रकार का दुख हो।

(ग) बातचीत के दौरान यदि कोई अच्छी भाषा बोले, तो उसे ध्यान से सुनकर हम उन शब्दों का प्रयोग स्वयं बोलते समय कर सकते हैं। बातचीत के दौरान आपकी बात बहुत सहज एवं स्वाभाविक लगनी चाहिए, उसमें दिखावा या बनावटीपन नहीं होना चाहिए। बातचीत में विनम्रता, शिष्टाचार, आचरण और शैली के गुणों का समावेश होना चाहिए।

(लेखनी)

1. (क) बातचीत का तरीका गलत हो तो सुनने वाला नाराज़ हो सकता है और हमारा नुकसान भी कर सकता है।

(ख) बातचीत करते समय हमें केवल अपनी बात ही नहीं कहते रहना चाहिए, अपितु सामने वाले को भी बात करने का मौका देना चाहिए। यदि हम सामने वाले की किसी बात से बीच में ही असहमत हो जाएँ तब उसे अपनी पूरी बात करने का मौका देना चाहिए। बीच में बार-बार टोकना नहीं चाहिए। वाद-विवाद के समय भी अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

(ग) बातचीत की भाषा सुधारने के लिए हमें अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़नी चाहिए। बातचीत के दौरान यदि कोई हमसे अच्छी भाषा बोले, तो उसे ध्यान से सुनकर उन शब्दों का प्रयोग स्वयं बोलते समय करना चाहिए।

(घ) बातचीत के दौरान हमें बनावटीपन या किसी प्रकार के दिखावे से बचना चाहिए। इसके अतिरिक्त हमें असहज या अस्वाभाविक लगने वाली बातों से दूर रहना चाहिए।

2. (क) अ (ख) ब
(ग) अ

Page-86

3. (क) नम्रता (ख) सम्मान
(ग) धीमी (घ) टोकना

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

शिष्टाचार जीवन का दर्पण है जिसमें हमारे व्यक्तित्व का स्वरूप दिखाई देता है। अच्छा या बुरा, दूसरों पर कैसा प्रभाव पड़ता है यह हमारे उस व्यवहार पर निर्भर करता है, जो हम दूसरों से करते हैं। अपने बड़ों तथा छोटों के साथ हमारा व्यवहार शिष्टतापूर्ण तथा नम्रतापूर्ण होना चाहिए। जिस प्रकार का व्यवहार हम अपने छोटों या बड़ों के साथ करेंगे, उसी प्रकार की प्रतिक्रिया हमें सामने वाले से भी मिलेगी। यदि हमारा व्यवहार अच्छा होगा तो सामने वाला खुश होगा। यदि हम

अपने बड़ों से ठीक व्यवहार नहीं करते तो वे हमें डाँट सकते हैं तथा नाराज़ हो सकते हैं। छोटों के साथ उचित व्यवहार न करने पर उनमें खीझ उत्पन्न होगी और वे अशिष्टता दिखाने लगेंगे। अत: जैसा व्यवहार हम दूसरों से पाने की अपेक्षा रखते हैं वैसा हमें करना भी चाहिए।

(भाषा-ज्ञान)

1. 'बातन हाथी पाइए, बातन हाथी पाँव।'
2. (क) (ii) (ख) (iii)
   (ग) (i)

(मन की बात)

1. (क) प्रत्येक व्यक्ति के साथ अच्छे ढंग से बातचीत करनी चाहिए।
   (ख) अपने स्वभाव में हमें नम्रता व शिष्टता का भाव रखना चाहिए।
   (ग) अपने से बड़ों के प्रति आदर तथा सम्मान का भाव रखना चाहिए तथा छोटों के प्रति स्नेह की भावना।
   (घ) ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए जिससे दूसरों को चोट पहुँचे या किसी प्रकार का दुख हो।
   (ङ) बातचीत के दौरान केवल स्वयं ही बोलते नहीं रहना चाहिए, सामने वाले को भी बोलने का मौका देना चाहिए।
   (च) बातचीत के दौरान बीच में बार-बार टोकना नहीं चाहिए।
   (छ) वाद-विवाद के दौरान अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी चाहिए।
   (ज) बातचीत करते समय धीरे-धीरे बात करनी चाहिए न कि ज़ोर-ज़ोर से।
   (झ) सदैव अच्छी भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
   (ञ) बातचीत करते समय सहज व स्वाभाविक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(हँसते-गाते)

विद्‌यार्थी स्वयं करें।

12 शतरंज के खिलाड़ी

(अभ्यास-उत्तर)

Page-89 (मौखिक)

(क) प्रस्तुत कहानी शतरंज के खेल पर आधारित है।
(ख) शतरंज की बिसात महंत ने बिछाई थी।
(ग) युवक के माथे से दबाव साफ़ ज़ाहिर हो रहा था।

(लेखनी)

1. (क) महंत ने युवक से कहा कि हम शतरंज की एक बाज़ी खेलेंगे और अगर मैं हार गया तो मैं इस मठ को हमेशा के लिए छोड़ दूँगा और तुम मेरा स्थान ले लोगे।
   (ख) युवक के लिए शतरंज खेलना इसलिए ज़रूरी हो गया क्योंकि वह मठ में रहना चाहता था।
   (ग) महंत ने खेल की शुरुआत खराब तरीके से इसलिए की क्योंकि वह युवक को परखना चाहता था कि क्या युवक अनुशासन और करुणा में सामंजस्य स्थापित कर सकता है।
   (घ) महंत युवक से पूर्णत: आश्वस्त हो गया था कि वह अनुशासन और

करुणा में सामंजस्य स्थापित कर सकता है क्योंकि उसने अपना पूरा ध्यान जीतने पर लगाया और अपने सपने के लिए वह लड़ सकता था। इसलिए महंत ने बिसात को ठोकर मारकर ज़मीन पर गिरा दिया।

Page-90

2. (क) अ (ख) ब
   (ग) ब (घ) अ
3. (क) महंत ने युवक से।
   (ख) युवक ने महंत से।
   (ग) महंत ने युवक से।
   (घ) महंत ने युवक से।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-90-91 (भाषा-ज्ञान)

1. (क) के समान (ख) के बिना
   (ग) के ऊपर (घ) के नीचे

Page-91

2. (क) भविष्यत् काल
   (ख) वर्तमान काल
   (ग) वर्तमान काल
   (घ) भविष्यत् काल
   (ङ) भूतकाल
   (च) भविष्यत् काल
3. (क) निजवाचक (ख) अनिश्चयवाचक
   (ग) पुरुषवाचक (घ) निश्चयवाचक
   (ङ) संबंधवाचक

Page-92

4. **स्त्रीलिंग** – लकड़ी, नदी, सड़क, आँधी, पीठ
   पुल्लिंग – मालिक, पानी, तूफ़ान, पुल, सपना
5. (ख) दयावान, निर्दयी, दयाहीन
   (ग) सुंदरता, अतिसुंदर, सुंदरी
   (घ) चमकीला, चमकदार, चमकहीन

(मन की बात)

1. प्रस्तुत कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' से हमें यह शिक्षा मिली कि हमें अच्छे कार्य को पूरा करने के लिए करुणा और अनुशासन का प्रयोग करना चाहिए और ऐसे कार्य की पूर्ति हेतु किसी भी वस्तु का त्याग करने में हिचकिचाना नहीं चाहिए। ईमानदारी से अपना कार्य करते रहने की शिक्षा भी हमें इस पाठ से मिलती है।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(हँसते-गाते)

विद्यार्थी स्वयं करें।

13 हम पंछी उन्मुक्त गगन के

(अभ्यास-उत्तर)

Page-94 (मौखिक)

(क) पक्षी सपनों में तरु की फुनगी पर झूले देख रहा है।

(ख) प्रस्तुत कविता का नाम है 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' है।

(ग) प्रस्तुत कविता पक्षियों की आज़ादी पर आधारित है।

Page-95

(लेखनी)

1. (क) पक्षी पिंजरे से मुक्त होने की आज़ादी की बात कर रहा है।

   (ख) जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति किसी के बंधन में रहकर कार्य नहीं करना चाहता तथा स्वतंत्र रहकर यहाँ-वहाँ घूमना चाहता है, उसी प्रकार पक्षी भी स्वतंत्र रूप से विचरण करना चाहता है। पिंजरे में बंद रहकर उसका दायरा सीमित रह जाता है, इसलिए हमें पक्षी को पिंजरे में बंद नहीं रखना चाहिए।

   (ग) पक्षी सोने की कटोरी में मैदा से बने व्यंजन छोड़ने को तैयार है, क्योंकि वह पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहता।

   (घ) पक्षी बहता जल पीने की बात कर रहा है, क्योंकि वह पिंजरे में बंद न रहकर स्वच्छंद रूप से उड़ना चाहता है।

2. स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
   अपनी गति, उड़ान सब भूले,
   बस सपनों में देख रहे हैं
   तरु की फुनगी पर के झूले।
   लेकिन पंख दिए हैं तो
   आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

3. (क) ब (ख) ब
   (ग) स

Page-96

4. (क) पक्षी बहता जल पीने की बात कर रहे हैं।

   (ख) सोने के पिंजरे में खाने के लिए मिले मैदा के भोजन से अच्छा पक्षी के लिए स्वच्छंद आकाश के नीचे निबोरी का कड़वा फल खाना है।

   (ग) कनक शब्द का अर्थ सोना है।

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

पक्षियों को पालना बिल्कुल भी उचित नहीं है, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें पंख उड़ने के लिए दिए हैं तो उन्हें पिंजरे के बंधन में क्यों कैद किया जाए? अपनी इच्छा से ऊँची-से-ऊँची उड़ान भरना, पेड़ों पर घोंसले बनाकर रहना, नदी-झरनों का पानी पीना, फल-फूल खाना तथा स्वच्छंद आकाश में विचरण करना ही उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। हम किसी को कितना भी सुखी बनाने का प्रयास करें परंतु उसके स्वाभाविक परिवेश से अलग करना उचित नहीं अपितु अनुचित ही कहा जाएगा।

(भाषा-ज्ञान)

1. (क) कटुक (ख) स्वर्ण
   (ग) क्षितिज (घ) सीमाहीन
   (ङ) आश्रय (च) आकुल

2. (क) प्रत्येक माता-पिता का यह अरमान होता है कि उनका बच्चा पढ़-लिखकर खूब कामयाब हो।

   (ख) मोर के पंख अत्यंत आकर्षक होते हैं।

   (ग) गगन में पक्षी विचरण करते हैं।

   (घ) पक्षी उड़ान भरकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचते हैं।

3. (क) स्वर्ग (ख) मर्यादा
   (ग) निसर्ग (घ) प्रति
   (ङ) प्रीत (च) मार्ग
   (छ) दुर्व्यसन

Page-97

(मन की बात)

1. प्रस्तुत कविता में यह बताया गया है कि पक्षी के पास पिंजरे के अंदर वे सारी

सुख-सुविधाएँ मौजूद होती हैं, जो एक सुखी जीवन के लिए आवश्यक हैं परंतु फिर भी वह इन सुख-सुविधाओं से स्वयं को परे रखते हुए स्वतंत्र रहना पसंद करता है। अतः हमें पक्षियों को पिंजरे में बंद करके उनकी स्वतंत्रता का हनन नहीं करना चाहिए, यही इस कविता का उद्देश्य है।

2. हाँ, हमने एक बार एक कबूतर पाला था। एक घायल कबूतर कहीं से उड़कर हमारे घर पर आ गया था, जिसकी देखभाल हमने अच्छी तरह से की। उसके ठीक होने के बाद भी वह हमारे घर से उड़ा नहीं और हमारे साथ रहने लगा। हम सभी घरवाले एक नवजात बच्चे की तरह उसकी देखभाल करते थे। उसे नहलाते तथा उसके खाने-पीने का पूरा ख्याल रखते थे। जहाँ वह बैठता था उस स्थान को प्रतिदिन साफ़ करते थे। इस प्रकार से हमने उसका ख्याल अच्छी तरह से रखा।

(हँसते-गाते)

बहुत समय पहले की बात है। एक ज़माने में एक प्रकृति रानी थी। धरती पर उसका ही राज था और सभी मानवों पर उसे बड़ा विश्वास था। परंतु समय बीतने के साथ-साथ सभी मानव प्रकृति के लिए दानव बन गए। अपने विलासपूर्ण जीवन के लिए वे प्रकृति को तहस-नहस करने लगे। अपने घरों का निर्माण करने के लिए मानव ने पेड़ों को काटना प्रारंभ किया। वे यहीं नहीं रुके, उन्होंने पशु-पक्षियों को भी मारना प्रारंभ कर दिया। इस तरह अपने फ़ायदे के लिए मानव ने प्रदूषण को भी बढ़ावा दिया। किंतु मानव अब अपनी इस करनी के लिए पछताता है।

प्रकृति ने मानव को अंततः थक-हारकर यह चेतावनी दी कि प्रकृति को नष्ट करने का अपना प्रयास रोक दो अन्यथा इस धरती पर अंधकार छा जाएगा।

14 अधिक लालच का फल

(अभ्यास-उत्तर)

Page-100 (मौखिक)

(क) द्वीप सागर के मध्य था।

(ख) द्वीप पर मछुआरा तथा उसकी पत्नी रहते थे।

(ग) मछुआरे को सुनहरे रंग की मछली मिली।

(घ) मछुआरे की पत्नी महल के बाहर के मनोरम दृश्य को निहार रही थी।

(ङ) मछुआरा व उसकी पत्नी पहले की ही तरह का जीवनयापन करने लगे।

Page-101

(लेखनी)

1. (क) मछुआरा ईमानदार और मेहनती व्यक्तित्व वाला था। वह प्रतिदिन सागर तट से अपने जाल में मछलियाँ पकड़ता था।

(ख) मछुआरे की पत्नी क्रोधित होकर बोली, "अरे मूर्ख, भाग्य खुलने का अच्छा अवसर आया था और तुमने उसे व्यर्थ ही जाने दिया। कम-से-कम खाने के लिए रोटी तो माँग ली होती।"

(ग) रोटी तथा झोंपड़ी की जगह नए घर की माँगें पूरी होने पर भी मछुआरे की पत्नी को संतुष्टि नहीं हुई।

(घ) मछुआरे की पत्नी ने रोटी, झोंपड़ी की जगह नए घर की, सुंदर औरत बनने तथा रानी बनने की माँगें पूरी करवाई।

(ङ) मछुआरा न चाहते हुए भी सुनहरी मछली के पास इसलिए जाता था क्योंकि वह अपनी पत्नी के क्रोध से डरता था।

(च) मछुआरे ने जब सुनहरी मछली को अपनी पत्नी के बढ़ते हुए लालच के बारे में बताया तो मछली बिना कुछ कहे गायब हो गई और मछुआरा व उसकी पत्नी दोनों अपनी पहले की दयनीय अवस्था में पहुँच गए। इस प्रकार मछुआरे की पत्नी को सबक मिल गया।

Page-101-102

2. (क) स (ख) अ
(ग) ब

Page-102

3. (क) मछुआरे ने सुनहरी मछली से कहा।
(ख) मछुआरे की पत्नी ने मछुआरे से कहा।
(ग) सुनहरी मछली ने मछुआरे से कहा।

4. 1. ङ 2. क
3. ख 4. ग
5. च 6. घ

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

(जीवन-मूल्य)

लालच कभी सुखी नहीं बनने देता, यह कथन पूर्णत: सत्य है। मानव जीवन में कामनाओं और लालसाओं का एक अटूट सिलसिला चलता ही रहता है। सबकुछ प्राप्त होने के बावजूद कुछ और भी प्राप्त करने की इच्छा मनुष्य के भीतर मृत्युपर्यंत चलती रहती है और इन्हीं इच्छाओं की पूर्ति में वह दिन-रात लगा रहता है, जिस कारण वह कभी भी सुख की प्राप्ति नहीं कर पाता। अधिकांश व्यक्तियों को धन या किसी-न-किसी वस्तु की प्राप्ति की लालसा निरंतर सताए रहती है कि उनका सुख इन्हीं वस्तुओं को प्राप्त करने के विलासी जीवन में है। लेकिन सुख का निवास मन है और मन से ही व्यक्ति सुख का अनुभव करता है। संतोषी व्यक्ति मन से संतुष्ट रहने के कारण ही सुखी रहता है।

Page-103

(भाषा-ज्ञान)

1. (क) (v) (ख) (iv)
(ग) (vii) (घ) (vi)
(ङ) (v) (च) (iii)
(छ) (ii)

2. पत्नी, भव्य, दृश्य, स्वर, मनुष्य, इच्छा, स्वतंत्र, भाग्य, व्यर्थ, अच्छा, आश्वासन, संतुष्ट, मध्य, नित्य, विलुप्त, स्थान।

3. एक दिन जब उसने मछली पकड़ने के लिए अपना जाल डाला और उसे खींचा तो कुछ भारी-सा महसूस हुआ। वह मुश्किल से जाल को खींच पा रहा था। जाल को बाहर निकालने पर उसने देखा कि उसमें सिर्फ़ एक छोटी-सी सुनहरे रंग की मछली थी। लेकिन वह साधारण मछली नहीं थी। वह मनुष्य की आवाज़ में मछुआरे से बोली, "हे मानव! मुझे मत

पकड़ो! मुझे नीले सागर में ही रहने दो। मैं तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूँगी। यदि तुम्हारी कोई इच्छा है तो बताओ, मैं उसे पूरा करूँगी।"

Page-104

(मन की बात)

1. जिस मनुष्य के पास केवल पैसा है, उस मनुष्य से ज़्यादा गरीब इस दुनिया में कोई नहीं है। ज़्यादा आय का मतलब ज़्यादा ज़िम्मेदारियाँ निभाना है। ऐसे व्यक्ति अपने काम तथा उससे जुड़े मसलों में ही घिरे रहते हैं। वे अपने परिवार, मित्रों एवं रिश्तेदारों आदि को भी अपना समय नहीं दे पाते, जिसका कारण उनकी रोजमर्रा की व्यस्तता है। अंधाधुंध पैसा कमाने की भाग-दौड़ तथा व्यस्तता के कारण वे किसी प्रकार का सुख प्राप्त नहीं कर पाते। इसके विपरीत जो कम में ही संतुष्ट हैं तथा पैसों के पीछे भाग नहीं रहे, ऐसे व्यक्ति अपने परिवार, सगे-संबंधियों को भी अपना समय दे पाते हैं तथा अपने जीवन में संतुष्ट और सुखी रहते हैं। जीवन के लिए पैसा होना आवश्यक है किंतु पैसों को कमाने का पागलपन व्यक्ति को सभी के बीच में अकेला कर देता है और ऐसे मनुष्य से गरीब इस दुनिया में और कोई नहीं होता।

2. दुनिया में लालच से भयानक और कुछ भी नहीं है। परंतु किसी भी इच्छा को लालच नहीं कहा जा सकता। अगर एक भूखा रोटी की इच्छा करता है तो ये लालच नहीं अपितु व्यक्ति की मूल आवश्यकता है। किंतु जब मनुष्य की इच्छा विलासिता में परिवर्तित हो जाए तब यह लालच बन जाती है। लालच के कारण व्यक्ति स्वार्थी और आत्मकेंद्रित जीवन जीने लगता है। स्वहित की भावना उसमें इतनी प्रबल हो जाती है कि अपनी विलासपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह चोरी तथा हत्या जैसे असामाजिक कार्य करने लगता है। उसकी इच्छाएँ दिन-प्रतिदिन हर प्रकार का सुख भोगने के लिए उसे विवश करती हैं, जिस कारण वह एक असामाजिक तत्व बन जाता है। किसी वस्तु को प्राप्त करने की अदम्य इच्छा ऐसे व्यक्ति को एक अपराधी बना देती है। आए दिन समाचार-पत्रों में भी ऐसी घटनाएँ देखने को मिलती हैं।

   अतः व्यक्ति को उतने में ही संतुष्ट रहना चाहिए जितना उसे प्राप्त हुआ है। अन्यथा व्यक्ति के भीतर का लालच एक भयानक रूप ले लेता है।

(हँसते-गाते)

विद्यार्थी स्वयं करें।